एफ ए सी टी में राजभाषा सम्मेलन - 2009

मंत्रालय के निदेशानुसार हर वर्ष एक राजभाषा सम्मेलन आयोजित करने के द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के लिए तथा हिंदी का प्रसार एवं प्रगति को लक्ष्य करके कोचीन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अधीन के केन्द्र सरकार कार्यालयों तथा सार्वजनिक उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों, हिंदी कर्मचारियों, राजभाषा से संबंधित अन्य अधिकारियों तथा एफ ए सी टी के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य तथा राजभाषा अनुपालन अधिकारियों की समिति के सदस्यों के लिए एफ ए सी टी ने 24 अगस्त, 2009 सोमवार को एफ ए सी टी के उद्योगमंडल क्लब में एक राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया।

सम्मेलन का उद्घाटन पूर्वाह्न 10.00 बजे हमारे अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. जॉर्ज स्लीबा जी ने किया। डॉ. अब्दुल जलील, रजिस्ट्रार, अलिगढ यूनिवेर्सिटी सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। आशंसा देने के लिए डॉ एन. जी. देवकी, प्रोफसर, कोचीन यूनिवेर्सिटी ऑफ साइन्स एण्ड टेकनॉलजी, श्री एम. हरिदासन, अध्यक्ष कोचीन टोलिक (सा उ) तथा बी एस एन एल के प्रधान महा प्रबंधक, श्रीमती एम. सी. शीला, सचिव, कोचीन टोलिक (सा उ) तथा बी एस एन एल के सहायक निदेशक (राजभाषा), हमारे राजभाषा कार्यान्वयन समिति के उपाध्यक्ष तथा निदेशक (विपणन) श्री ए. अशोकन और राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य तथा निदेशक (तकनीकी) श्री वी. जी. शंकरानारायणन आदि ने सम्मेलन में आशंसा भाषण दिए। सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. जॉर्ज स्लीबा ने दीप प्रज्वलित करके औपचारिक रूप से सम्मेलन का उद्घाटन किया। उसके बाद डॉ. अब्दुल जलील, श्री एम. हरिदासन, डॉ एन जी देवकी, श्री ए. अशोकन, श्री वी. जी. शंकरानारायणन तथा श्रीमती एम सी शीला ने भी दीप प्रज्वलित किया। हिन्दी कार्यक्रम समिति - 2009 के अध्यक्ष तथा उप महा प्रबंधक (वित्त) श्री एस. हरिहरन ने सबका स्वागत किया।

राजभाषा सम्मेलन के मुख्य अतिथि प्रो अब्दुल जलील, अलिगढ विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार ने राजभाषा के बारे में सविस्तार भाषण दिया। उन्होंने कहा कि भारत के पूर्वी क्षेत्र में पूर्वी हिंदी बोली जाती है। दक्षिण-उत्तर में जो हिंदी बोली जाती है वह अवधि और खडीबोली है। इस प्रकार हिन्दी का भिन्न-भिन्न बोलियां बोली जाती है। लेकिन भिन्न-भिन्न बोलियां बोलने पर भी संपूर्ण भारत के हिंदुस्तानी की भाषा है हिंदी। हिंदी अनेक बोलियों की मिश्रित भाषा है। हिंदी देवनागरी लिपि में होती है। इसके बाद उन्होंने अलिगढ विश्वविद्यालय के बारे में भी कुछ बताया। यूनिवेर्सिटी में त्रिभाषीय फार्मुला कार्यान्वित करने के लिए ज़ोर दिया। भारतीय संस्कृति को कायम रखने के लिए हिंदुस्तान की संपन्न भाषा हिंदी के प्रचार एवं विकास करने का आग्रह भी उन्होंने प्रकट किया। उन्होंने विभिन्न भाषाओं के बारे में भी भाषण दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति के विकास के लिए हिंदी का विकास होना आवश्यक ही है।

संस्कृत तथा अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को प्रयुक्त करके हिंदी भाषा को समुन्नत किया गया है। अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है हिंदी। समस्त भारत में बोली जानेवाली शब्दों को ग्रहण करनेवाली